Bihar Board Class 12th Hindi Book Notes Chapter 5 रोज

रोज लेखक परिचय सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय (1911-1987)

जीवन-परिचय :
हिन्दी के आधुनिक साहित्य में प्रमुख स्थान रखने वाले साहित्यकार सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय का जन्म 7 मार्च, सन् 1911 के दिन कुशीनगर, उत्तर प्रदेश के कसेया नामक स्थान पर हुआ। वैसे इनका मूल निवास कर्तारपुर, पंजाब था। इनकी माता का नाम व्यंती देवी और पिता का नाम हीरानंद शास्त्री था जो कि प्रख्यात पुरातत्ववेत्ता थे। अज्ञेय . जी की प्रारम्भिक शिक्षा लखनऊ में घर पर ही हुई। सन् 1925 में इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक की तथा सन् 1927 में मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से इंटर किया। इसके उपरांत सन् 1929 में फोरमन कॉलेज, लाहौर, पंजाब से बी.एससी. किया और फिर लाहौर से एम.ए. (अंग्रेजी, पूवार्द्ध) किया। क्रान्तिकारी आन्दोलनों में भाग लेने तथा गिरफ्तार हो जाने के कारण इनकी पढ़ाई बीच में ही रूक गई।

इनका व्यक्तित्व बड़ा ही प्रभावशाली था तथा ये सुन्दर व गठीले शरीर के स्वामी थे। इनका स्वभाव एकांतप्रिय अंतर्मुखी था तथा ये एक अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे। गंभीर, चिन्तनशील एवं मितभाषी व्यक्तित्व के स्वामी अज्ञेय जी अपने मौन तथा मितभाषण के लिए प्रसिद्ध थे। पिताजी का तबादला बार-बार होते रहने के कारण इन्हें परिभ्रमण का संस्कार बचपन में ही मिला था। इन्हें संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी, तमिल आदि कई भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। ये बागवानी, पर्यटन आदि के अलावा कई प्रकार के पेशेवर कार्यों में दक्ष थे। इन्होंने यूरोप, एशिया, अमेरिका सहित कई देशों की साहित्यिक यात्राएँ भी की थी।

अज्ञेय जी को साहित्य अकादमी, भारतीय ज्ञानपीठ, मुगा (युगास्लाविया) का अंतर्राष्ट्रीय स्वर्णमाल आदि पुरस्कार प्रदान किए गए। देश-विदेश के कई विश्वविद्यालयों में इन्हें 'विजिटिंग प्रोफेसर' के रूप में आमंत्रित किया गया। इन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में कई महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं आदि में कार्य किया। जैसे-सैनिक (आगरा), विशाल भारत (कोलकाता), प्रतीक, (प्रयाग), दिनमान (दिल्ली), नया प्रतीक (दिल्ली), नवभारत टाइम्स (नई दिल्ली), थॉट, वाक एवरीमैंस (अंगेजी में सम्पादन)। साहित्य के इस महान साधक का निधन 4 अप्रैल, सन् 1987 के दिन हुआ।

रचनाएँ :
अज्ञेय जी अद्‌भुत प्रतिभा के स्वामी थे। इन्होंने दस वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखना आरम्भ कर दिया था। वहीं बचपन में ही खेलने के उद्देश्य से 'इन्द्रसभा' नामक नाटक लिखा। ये घर में एक हस्तलिखित पत्रिका 'आनन्दबन्धु' निकालते थे। इन्होंने सन् 1924-25 में अंग्रेजी में एक उपन्यास लिखा। सन् 1924 में ही इनकी पहली कहानी इलाहाबाद की स्काउट पत्रिका 'सेवा' में प्रकाशित हुई और इसके बाद इन्होंने नियमित रूप से लेखन कार्य प्रारम्भ कर दिया। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं

कहानी संकलन-विपथगा, जयदोल, ये तेरे प्रतिरूप, छोड़ा हुआ रास्ता, लौटती पगडंडियाँ आदि।

उपन्यास-शेखर : एक जीवनी (प्रथम भाग 1941), द्वितीय भाग 1944), नदी के द्वीप (1952), अपने-अपने अजनबी (1961)।

नाटक-उत्तर प्रियदर्शी (1967)।

कविता संकलन-भग्नदूत, चिन्ता, इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, आँगन के पार द्वार; कितनी नावों में कितनी बार, सदानीरा, ऐसा कोई घर आपने देखा है आदि।

यात्रा साहित्य-अरे यायावर रहेगा याद (1953), एक बूंद सहसा उछली (1961)। निबन्ध-त्रिशंकु, आत्मनेपद, आलवाल, अद्यतन, भवंती, अंतरा, शाश्वती, संवत्सर आदि।

रोज पाठ के सारांश।

कहानी के पहले भाग में मालती द्वारा अपने भाई के औपचारिक स्वागत का उल्लेख है जिसमें कोई उत्साह नहीं है, बल्कि कर्तव्यपालन की औपचारिकता अधिक है। वह अतिथि का कुशलक्षेम तक नहीं पूछती, पर पंखा अवश्य झलती है। उसके प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर देती है। बचपन की बातूनी चंचल लड़की शादी के दो वर्षों बाद इतनी बदल जाती है कि वह चुप रहने लगती है। उसका व्यक्तित्व बुझ-सा गया है। अतिथि का आना उस घर के ऊपर कोई काली छाया मँडराती हुई लगती है।

मालती और अतिथि के बीच के मौन को मालती का बच्चा सोते-सोते रोने से तोड़ता है। वह बच्चे को संभालने के कर्तव्य का पालन करने के लिए दूसरे कमरे में चली जाती है। अतिथि एक तीखा प्रश्न पूछता है तो उसका उत्तर वह एक प्रश्नवाचक हूँ से देती है। मानो उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं है। यह आचरण उसकी उदासी, ऊबाहट और यांत्रिक जीवन की यंत्रणा को प्रकट करता है। दो वर्षों के वैवाहिक जीवन के बाद नारी कितनी बदल जाती है वह कहानी के इस भाग में प्रकट हो जाती है। कहानी के इस भाग में मालती कर्त्तव्यपालन की औपचारिकता पूरी करती प्रतीत होती है पर से कर्त्तव्यपालन में कोई उत्साह नहीं है जिसमें उसके नीरस, उदास, यांत्रिक जीवन की ओर संकेत करता है। अतिथि से हुए उसके संवादों में भी एक उत्साहहीनता और ठंढापन है। उसका व्यवहार उसकी द्वन्दग्रस्त मनोदशा का सूचक है। इस प्रकार कहानीकार बाह्य स्थिति और मन:स्थिति के संश्लिष्ट अंकन में सफल हुआ है।

रोज कहानी के दूसरे भाग में मालती का अंतर्द्वन्द्वग्रस्त मानसिक स्थिति, बीते बचपन की स्मृतियों में खोने से एक असंज्ञा की स्थिति, शारीरिक जड़ता और थकान का कुशल अंकन हुआ है। साथ ही उसके पति के यांत्रिक जीवन, पानी, सब्जी, नौकर आदि के अभावों का भी उल्लेख हुआ है। मालती पति के खाने के बाद दोपहर को तीन बजे और रात को दस बजे ही भोजन करेगी और यह रोज का क्रम है। बच्चे का रोना मालती का देर से भोजन करना, पानी का नियमित रूप से वक्त पर न आना, पति का सबेरे डिस्पेन्सरी जाकर दोपहर को लौटना और शाम को फिर डिस्पेन्सरी में रोगियों को देखना यह सब कुछ मालती के जीवन की सूचना देता है अथवा यह बताता है कि समय काटना उसके लिए कठिन हो रहा है।

इस भाग में मालती, महेश्वर, अतिथि के बहुत कम क्रियाकलापों और अत्यन्त संक्षिप्त संवादों के अंकन से पात्रों की बदलती मानसिक स्थितियों को प्रस्तुत किया गया है जिससे यही लगता है कि लेखक का ध्यान बाह्य दृश्य के बजाए अंतर्दृश्य पर अधिक है। कहानी के तीसरे भाग में महेश्वर की यांत्रिक दिनचर्या, अस्पताल के एक जैसे ढर्रे रोगियों की टांग काटने या उसके मरने के नित्य चिकित्सा कर्म का पता चलता है, पर अज्ञेय का ध्यान मालती के जीवन संघर्ष को चित्रित करने पर केन्द्रित है।

महेश्वर और अतिथि बाहर पलंग पर बैठकर गपशप करते रहे और चाँदनी रात का आनन्द लेते रहे पर मालती घर के अन्दर बर्तन मांजती रही, क्योंकि यही उसकी नियति थी।

https://www.evidyarthi.in/

बच्चे का बार-बार पलंग से नीचे गिर पड़ना और उस पर मालती की चिड़चिड़ी प्रतिक्रिया मानो पूछती है वह बच्चे को संभाले या बर्तन मले? यह काम-नारी को ही क्यों करना पड़ता है? क्या यही उसकी नियति है? इस अचानक प्रकट होने वाली जीवनेच्छा के बावजूद कहानी का मुख्य स्वर चुनौती के बजाए समझौते का और मालती की सहनशीलता का है। इसमें नारी जीवन की विषम स्थितियों का कुशल अंकन हुआ है। बच्चे की चोटें भी मामूली बात है, क्योंकि वह रोज इन चोटों को सहती रहती है। 'रोज' की ध्वनि कहानी में निरन्तर गूंजती रहती है।

कहानी 'का अंत 'ग्यारह' बजने की घंटा-ध्वनि से होता है और तब मालती करुण स्वर में कहती है "ग्यारह बज गए" उसका घंटा गिनना उसके जीवन की निराशा और करुण स्थिति कान्द्रत ह। को प्रकट करता है। कहानी एक रोचक मोड़ पर वहाँ पहुँचती है, जहाँ महेश्वर अपनी पत्नी को आम धोकर लाने का आदेश देता है। आम एक अखबार के टुकड़े में लिपटे हैं। जब वह अखबार का टुकड़ा देखती है, तो उसे पढ़ने में तल्लीन हो जाती है। उसके घर में अखबार का भी अभाव है। वह अखबार के लिए भी तरसती है। इसलिए अखबार क टुकड़ा हाथ में आने पर वह उसे पढ़ने में तल्लीन हो जाती है।

यह इस बात का सूचक है कि अपनी सीमित दुनिया से बाहर निकल कर वह उसके आस-पास की व्यापक दुनिया से जुड़ना चाहती है। जीवन की जड़ता के बीच भी उसमें कुछ जिज्ञासा बनी है जो उसकी जिजीविषा की सूचक है। मालती की जिजीविषा के लक्षण कहानी में यदा-कदा प्रकट होते हैं, पर कहानी का मुख्य स्वर चुनौती का नहीं है, बल्कि समझौते और परिस्थितियों के प्रति सहनशीलता का है जो उसके मूल में उसकी पति के प्रतिनिष्ठा और कर्त्तव्यपरायणता को अभिव्यक्त करता है। वह भी परंपरागत सोच की शिकार है जो इसमें विश्वास करती है कि यह उसके जीवन का सच है।

इससे इतर वह सोच भी नहीं सकती। जिस प्रकार से समाज के सरोकारों से वह कटी हुई है उसे रोज का अखबार तक सीमित नहीं है। जिससे अपने ऊबाउपन जीवन से दो क्षण निकालकर बाहर की दुनिया में क्या कुछ घटित हो रहा है उससे जुड़ने का मौका मिल सके। ऐसी स्थिति में एक आम महिला से अपने अस्तित्व के प्रति चिन्तित होकर सोचते उसके लिए संघर्ष करने अथवा ऊबाऊ जीवन से उबरने हेतु जीवन में कुछ परिवर्तन लाने की उम्मीद ही नहीं बचती।